पुस्तक का नाम:- निबंध माला

शीर्षक:-"अनेकता में एकता: भारतीय साहित्य में"

लेखक:- जानकी वल्लभ शास्त्री

शास्त्री द्वि० खण्ड - अनिवार्य द्वि० पत्र - राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न:- 'अनेकता में एकता; भारतीय साहित्य में' शीर्षक निबंध का सारांश लिखिए।

उत्तर: महाकवि जानकी वल्लभ शास्त्री बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे दार्शनिक, प्रबन्धकार, समीक्षक एवं उच्च कोटि के प्रबन्धकार भी थे। इनकी रचनाओं में जहाँ एक ओर चिंतन की गहराई है वहीं दूसरी ओर गम्भीरता भी है। गद्य हो पद्य शास्त्री जी अपनी भावनाओं से उसे लोकप्रिय बना लेते थे। विश्व-मंगल की कामनाओं से उनकी रचनाएँ भरी पड़ी हैं। 'अनेकता में एकता: भारतीय साहित्य में' नामक निबंध इनकी बाँसुरी का वही स्वर है, जो राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता को हिमालय के शिखर से अनुगूंजित कर रहा है।

'अविभक्तं विभक्तेषु'- विभक्तों में अविभक्त भारतीय भावना का मूल स्वर है। यही स्वर हमारी अनेकता में एकता को प्रतिबिम्बित करता है।

हमारी यह एकता कोई आकस्मिक घटना नहीं है। हमारी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में ही इस चेतना को देखा जा सकता है। उपनिषद में भी अनेकता में एकता का दर्शन होता है। सांख्य दर्शन में प्रकृति को त्रिगुणात्मक कहा गया है। महाकवि कालीदास, बाणभट्ट आदि कवि कहते हैं कि सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय के देवता ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश कार्य भेद होने पर भी एक ही ब्रह्म के तीन नाम हैं। ये तीनों, तीन गुणों के प्रतीक हैं जिनमें एक ही प्रकृति सामंजस्य स्थापित करती है। रामकृष्ण परमहंस ने विभिन्न धर्मों के आचरणों में एकता की समान झाँकि देखी थी। सभी भारतीय कलाविद् समस्त कलाओं में एक ही सौन्दर्य की अनुभूति करते हैं। अलंकारवादी कवियों ने भी कहा है

शेष आगे -

कि भले ही रस के नौ भेद हो परन्तु सबों की मूल आत्मा अखण्ड आनन्द ही है। जगतगुरु शंकराचार्य को भी देवी की श्वेत, श्याम, रतनार आँखों में सत्व, रज और तम तीनों गुणों की स्थिति समान ही दिखाई पड़ती है, जिसमें उन्हें गंगा, यमुना और सोन के दर्शन हुए हैं।

अनेकता में एकता की उपलब्धि समन्वय से होती है। संत कबीर, गोस्वामी तुलसीदास आदि कवियों की रचनाओं में समन्वयवादी सन्देश का सहज रूप से दर्शन होता है। 'निराला' के काव्य में भी एकता एवं समन्वय का मुखर स्वर दिखाई पड़ता है।

शास्त्री जी को इस बात का दुःख है कि कुछ स्वार्थी तत्व अपने घृणित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राजनीति को हथकण्डा बनाकर हमारी एकता के मधुवन को उजाड़ना चाहते हैं। अतः वे बड़ी भावुकता के साथ देशवासियों का आह्वान करते हैं- हे देशवासी आओ अग्रपंथी, उग्रपंथी, प्राचीन, नवीन सब आओ! आओ धनी, सर्वहारा, श्रमिक, मजदूर सब एक साथ आओ। राजनीतिक दलबन्दी तो थोथी होती है। धोखे की टट्टी है वह। वस्तुतः एकता, स्वाधीनता और शान्ति एक ही अर्थ के भिन्न-भिन्न शब्द हैं। इस प्रकार राष्ट्र एकता और अखण्डता को सर्वोत्तम माना है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 22/04/21
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

दिगंत - भाग - 2 पद्य भाग

शीर्षक :- 'उषा'

कवि :- शमशेर बहादुर सिंह

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या -

"जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत - भाग - 2 के उषा शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी के महान कवि श्री शमशेर - बहादुर सिंह जी हैं। यहाँ कवि प्रातःकालीन दृश्य का मनोहारी चित्रण कर रहा है।

प्रातःकाल आकाश में जादू होता सा प्रतीत होता है जो पूर्ण सूर्योदय के पश्चात् टूट जाता है। उषा का जादू यह है कि वह अनेक रहस्यपूर्ण एवं विचित्र स्थितियाँ उत्पन्न करता है। कभी पुती स्लेट, कभी गीला चौका, कभी शंख के समान आकाश तो कभी नीले जल में झिलमिलाती देह - ये सभी दृश्य जादू के समान प्रतीत होते हैं।

इस प्रकार कवि के अनुसार सूर्योदय होते ही आकाश स्पष्ट हो जाता है और 'उषा' का जादू समाप्त हो जाता है। कवि ने यहाँ प्रकृति - सौन्दर्य के लिए नये उपमानों के साथ सुन्दर चित्रण किया है। इससे कवि की भाव व्यंजना में नव सौन्दर्य आ गया है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 24/04/21
रा० उ० सं० महावि० कुरसेला, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

जयद्रथ-वध

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त Date _____ Page _____

सुत-घातकों को देखते ही पार्थ मानो जल उठे,
मुख मार्ग से क्या द्वेष ही तो वे वहाँ न उगल उठे ॥
"आचार्य! मेरा हस्त कौशल देख लेना फिर कभी,
अभिमन्यु का बदला तुम्हें लेकर दिखाना है अभी।"
इस भाँति बातों में समर का श्री गणेश हुआ जहाँ,
होने लगा तत्काल ही अति-तुमुल कोलाहल वहाँ।
ज्यों नीर बरसाते जलद करते हुए गुरु गर्जना।
लड़ने लगे दोनों प्रबल-दल कर परस्पर तर्जना ॥

भावार्थ

अर्जुन गुरु द्रोणाचार्य की बातों का उत्तर देते हुए कहते हैं कि अभिमन्यु को मारने वाले को देखकर मैं जल उठा परन्तु मैं अपने भीतर की उस आग को मुख मार्ग से प्रकट नहीं किया। इसके पश्चात् अर्जुन कहते हैं कि हे आचार्य मेरा हस्त कौशल फिर कभी देख लेना। अभी तो मुझको तुम अभिमन्यु का बदला लेकर दिखाने दो।

इस प्रकार आचार्य और शिष्य के वार्तालाप से युद्ध आरम्भ हो गया। वहाँ उसी समय से भयंकर कोलाहल होने लगा। जिस प्रकार जल बरसाते हुए मेघ भयंकर स्वर से गर्जना कर उठते हैं उसी प्रकार दोनों प्रबल दल एक दूसरे को डराते-धमकाते हुए लड़ने लगे।

राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से जहाँ अर्जुन के आक्रोश का विस्तार से वर्णन किये हैं वहाँ दोनों पक्षों के बीच भयंकर युद्ध का भी दर्शन कराते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महाकि० सुखसेना, पूर्णियाँ
22/04/21